छायावादी काव्य : अतीत के गौरवगान से राष्ट्रीयता का मण्डन

डॉ0 अमिताभ पाण्डेय *

साधारणतः यह समझा जाता है कि अतीत वर्णन वर्तमान संघर्ष से पलायन है। जबकि छायावादी कवियों द्वारा अतीत का अवलोकन पुनरूत्थानवाद का अंग है, जिसके माध्यम से विजित जाति में राष्ट्रीय चेतना का उद्‌भव एवं विकास होता है। वर्तमान जीवन में ह्रास और हीन भावना के तिरोभाव के लिए अतीत को ग्रहण करते हैं। इसके द्वारा देश को नई चेतना नया उत्साह प्रदान किया जाता है। छायावादी काव्य में अतीत प्रेम का यही रूप प्रकट हुआ है। इस तरह अतीत के पुनरूत्थान ने सम्पूर्ण देश में एक जातीय अथवा राष्ट्रीय भावना का सूत्रपात किया है। इस प्रकार हिन्दी काव्य के अतीत वर्णन ने पराजित एवम् हीनभावना से ग्रस्त जाति में आत्म गौरव की प्रतिष्ठा की और राष्ट्रीय चेतना का विकास किया।

अतीत अवलोकन को सांस्कृतिक राष्ट्रीय चेतना का एक रूप कहना अधिक उचित जान पड़ता है। सांस्कृतिक राष्ट्रीय भावना की अभिव्यक्ति अतीत वर्णन के माध्यम से छायावादी युग में भी हुई । जयशंकर प्रसाद, निराला, रामचरित उपाध्याय, सोहन लाल द्विवेदी, दिनकर आदि कवियों ने अतीत के सौन्दर्य को वर्तमान अधोगति की पृष्ठभूमि पर जीवन चित्र प्रस्तुत किया और राष्ट्रीयता को बहुत बल प्रदान किया।

छायावादी कवियों ने भारत का गौरवपूर्ण अतीत चित्रित करने में सराहनीय प्रयास किया। सियारामशरण गुप्त ने ''मौर्य विजय'' में चन्द्रगुप्त मौर्य की वीरता, धैर्य और कीर्ति का गान किया । उदाहरणार्थ–

जिसके समक्ष न एक भी विजयी सिंकन्दर की चली,
वह चन्द्रगुप्त महीप था कैसा अपूर्व महाबली,
जिससे कि सेल्यूकस समर में हार तो था दे गया,
कांधार आदित्य देश देकर निज सुता था दे गया।[1]

***सहायक अध्यापक हिन्दी, एच.एच. के. एम. इण्टर कॉलेज, गॉजियाबाद**

उपर्युक्त गीत मैथिलीशरण गुप्त द्वारा रचित है जो ''मौर्य विजय'' के मुख्य पृष्ठ पर मुद्रित है। सियारामशरण गुप्त ने भी भारत के अतीत कला का चित्रण करके पराधीन देश के लोगों में आत्मविश्वास और कर्तव्य परायणता का भाव जागृत किया है–

धीर वीर उस समय सभी थे भारतवासी,
थे अब के से नही दीन, जड़, रूग्ण विलासी।
आर्योचित ही कार्य सभी कोई करते थें,
रण क्षेत्र में नही काल से भी डरते थे।[2]

दिनकर जी ने भारत की अतीत गाथा का गान ओज पूर्ण शब्दो में किया है। सच तो यह है कि ''दिनकर में इतिहास अपनी सम्पूर्ण वेदनाओं को लेकर बोलता है''[3] दिनकर जी ने ''दिल्ली'' में दिल्ली के अतीत कालीन गौरव मुस्लिम संस्कृति के उत्कर्ष वीर पात्रों और ऐतिहासिक स्थानों की स्मृति दिलाकर देशवासियों को जगाया है–

हमने देखा यहीं पांडु वीरों का कीर्ति प्रसार,
वैभव का सुख स्वप्न कला का महा स्वप्न अभिसार।
यही कही अपनी रानी थी, तू ऐसे मत भूल–
अकबर शाहजहां ने जिसका किया स्वयं श्रृंगार।
ते न ऐंठ मदमाती दिल्ली ! मत फिर यो इतराती दिल्ली।
अविदित नही हमें तेरी, कितनी कठोर है छाती दिल्ली।[4]

''रेणुका'' में दिनकर जी ने पाटलिपुत्र की समृद्धि और ऐश्वर्य का वर्णन किया है। पाटलिपुत्र की गणना भारत के महान राज्यों में की जाती थी। भारत का नेपोलियन समुद्रगुप्त यहीं का राजा था। कवि पाटलिपुत्र की गंगा को संबोधित करते हुए कहता है–

तुझे याद है चढ़े पदों पर, कितने जय सुमनों के हार ?
कितनी बार समुद्रगुप्त ने धोई है तुममें तलवार ?
तेरे तीरों पर दिग्विजयी नृप के कितनी उड़े निशान ?
कितने चक्रवर्तियों ने है किए कूल पर अमृत स्नान ?
विजयी चन्द्रगुप्त के पटपर सेल्यूकस की वह मनुहार,
तुझे याद है देवी! मगध का वह विराट उज्ज्वल श्रृंगार ?[5]

दिनकर जी ने अतीत के भारतीय वीरों के उत्साह का वर्णन करके वर्तमान के लोगों में नवीन चेतना एवं स्फूर्ति का संचार किया है। उनके उद्‌गारों में प्रबल

हुंकार और धधकते हुए हृदय की एक पुकार विद्यमान है–

रे रोक युधिष्ठिर को न यहाँ जाने दे उनको स्वर्ग धीर,
पर फिरा हमें गांडीव गदा लौटा दे अर्जुन भीम वीर ।
तू पूछ अवध से राम कहाँ? वृंदा बोलो घनश्याम कहाँ?
ओ मगध! कहाँ मेरे अशोक, वह चन्द्रगुप्त बलधाम कहाँ ?[6]

''दिल्ली'' में निराला जी भारत के स्वर्णिम अतीत का स्मरण कराते हुए पराधीन राष्ट्र के नागरिकों में क्षोभ उत्पन्न करते है–

क्या यह वही देश है
भीमार्जुन आदि का कीर्तिक्षेत्र,
चिरकुमार भीष्म की पताका ब्रम्हचर्य दीप्त
उड़ती है आज भी जहाँ के वायुमण्डल में
उज्ज्वल अधीर और चिरनवीर?
श्री मुख से कृष्ण के सुना था जहां भारत ने
गीता–गीता–सिंहनाद.....
मर्म वाणी जीवन संग्राम की
सार्थक समन्वय ज्ञान कर्म भक्ति योग का।[7]

निराला जी ने '' खंडहर की प्रति'' कविता में प्राचीन काल के ऋषियों मुनियों की गौरवपूर्ण गाथा का स्मरण दिलाया है–

है यशो राशि!
कहते हो आँसू बहाते हुए,
आर्त भारत! जनक हूँ मैं,
जैमिनी पतंजलि व्यास ऋषियों का,
मेरी ही गोंद पर शैशव विनोद कर,
तेरा है बढ़ाया मान,
राम कृष्ण भीमार्जुन भीष्म नरदेवों ने।[8]

भारतीयों में राष्ट्रीयता की चेतना और शौर्य को जाग्रत करने के लिए निराला जी ने ''छत्रपति शिवाजी का पत्र'' जैसी कविताएं लिखी। उनकी जोश भरी कुछ पंक्तियां इस प्रकार है–

वीर! सरदारों के सरदार! महाराज!
बहुजाति क्यारियों की पत्र पुष्प दल भरे

ऑन बान शान वाले भारत उद्यान के
नायक हो, रक्षक हो,
X X X X X X
वंशज हो चेतन अमल अंश
हृदयाधिकारी रघुकुल मणि रघुनाथ के।[9]

प्रसाद जी का साहित्य अतीत की गौरव गाथा का ज्वलंत उदाहरण है। ''चन्द्रगुप्त'' नाटक में उन्होंने भारत की अतीत की प्रतिच्छवि अंकित की है।''महाराणा का महत्व'' में उन्होने यशस्वी राजपूत राणा प्रताप की वीरता का वर्णन किया है–

कहो कौन है? आर्य जाति की तेज सा
देशभक्त, जननी का सच्चा पुत्र है
भारतवासी! नाम बताना पड़ेगा
मसि मुख में से कहो लेखनी क्या लिखें।
उस पवित्र प्रातः स्मरणीय सुनाम को।
नहीं नहीं होगी, पवित्र यह लेखनी
लिखकर स्वर्णाक्षर का नाम ''प्रताप'' का ।[10]

अतीत की स्वर्णिम घटनाओं से परतंत्रता के प्रति क्षोभ उत्पन्न होता है तथा समाज उससे मुक्ति चाहने का प्रयास करता है ''राष्ट्रीय चेतना ने हमारा ध्यान प्राचीन गौरव गाथा की ओर आकर्षित किया। गौरवमय अतीत के सहारे ही गौरवमय भविष्य के निर्माण की आशा की जा सकती है।[11] इसलिए कवियों ने अतीत की खोज में रूचि दिखाईं सुभद्रा कुमारी चौहान ने 1857 ईसवी के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की याद दिलाई, जिसमें भारतीयों ने अंग्रेजो के दांत खट्टे कर दिए थें।

सिंहासन हिल उठे राजवंशों ने भृकुटी तानी थी
बूढे भारत में भी फिर से, आई नई जवानी थी
गुमी हुई आजादी की, कीमत सबने पहचानी थी
दूर फिरंगी को करने की, सबने मन में ठानी थी।[12]

'' वीरों का कैसा हो बंसत'' में सुभद्रा कुमारी चौहान जी ने देश के प्रसिद्ध रणस्थलों का स्मरण करती हुई कहती है–

कह दे अतीत अब मौन त्याग, लंके तुझमे क्यो लगी आग?
ए कुरूक्षेत्र! अब जाग, जाग बताता अपने अनुभव अंनत

वीरों का कैसा हो बंसत ?
हल्दी घाटी के शिलाखंड ए दुर्ग! सिंह गढ़ के प्रचंड,
राणा नाना का कर घमंड, दो जगा आज स्मृतियां ज्वलंत
वीरों का कैसा हो वंसत?[13]

माखनलाल चतुर्वेदी का काव्य अतीत के जोश और आवेग से अछूता नहीं रहा है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उन्हें भी राजपूतानें का जोश भरा इतिहास याद आता है जौहर याद आता है और वे स्फूर्तिला गीत गा उठते है–

''माना जौहर भी होता था,
मरने के त्योहारों वाला
और पतन की अगर सिंधु से
तरने के त्योहारों वाला।
X. X. X. X.
जौहर से बढ़कर घोड़े पर,
चढ़कर जौहर दिखलाने दो।
चूड़ियाँ हों सुहागिनी यौवन,
यौवन अपनी पर आने दो।''

स्पष्ट है कि छायावादी कवियों ने अतीत का मुक्त कंठ से गान किया है वर्तमान की क्षतिपूर्ति के लिए उन्हें अतीत में पर्याप्त साधन मिल गए।[14] इसके साथ ही उनकी अतीत की गौरव गाथा की प्रवृति पर अंग्रेजों का प्रभाव पड़ा है मैक्स मूलर, विलियम जॉन्स, कॉल हुक आदि के शोध कार्य से कवियों की दृष्टि अतीत की ओर गई। गाँधी जी तथा सभी राष्ट्रीय नेताओं का भी भारत के प्राचीन गौरव और प्रतिष्ठा में विश्वास था।[15] अतः छायावादी कवियों ने अपने अनुकूल अतीत से सामग्री ग्रहण करके राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति की।

संदर्भ सूची

1. मौर्य विजय–सियारामशरण गुप्त मुखपृष्ठ
2. मौर्य विजय–सियारामशरण गुप्त पृष्ठ 12
3. दिग्भ्रमित राष्ट्रकवि–प्रोफेसर कामेश वचन वर्मा पृष्ठ 21
4. दिल्ली–दिनकर पृष्ठ 3
5. रेणुका–दिनकर पृष्ठ 25

6. रेणुका–दिनकर पृष्ठ 7
7. अनामिका–निराला पृष्ठ 58
8. अपरा–निराला पृष्ठ 132
9. अपरा–निराला पृष्ठ 75
10. महाराणा प्रताप का महत्व–जयशंकर प्रसाद पृष्ठ 91
11. काव्य विमर्श–डॉक्टर गुलाब राय पृष्ठ 197
12. मुकुल–सुभद्रा कुमारी चौहान पृष्ठ 56
13. मुकुल–सुभद्रा कुमारी चौहान पृष्ठ 112
14. आधुनिक हिन्दी कविता में राष्ट्रीय भावना–डॉ सुधाकर शंकर कलवाड़ा पृष्ठ 134
15. भारतीय राष्ट्रवाद की विकास की हिन्दी साहित्य में अभिव्यक्ति–सुषमा नारायण पृष्ठ 74

****